

3068

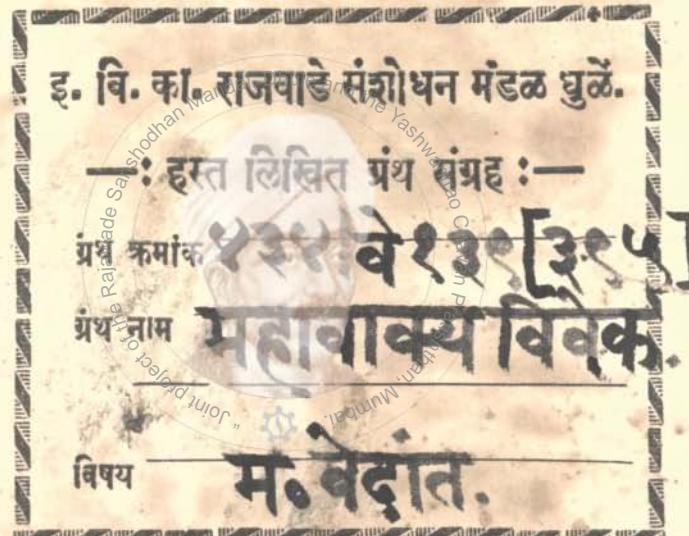
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—ः हस्त लिखित प्रथं संग्रहः—

प्रथं क्रमांक ५३५ बे१३० [३०५]

ग्रंथ नाम महावाक्य विवरक.

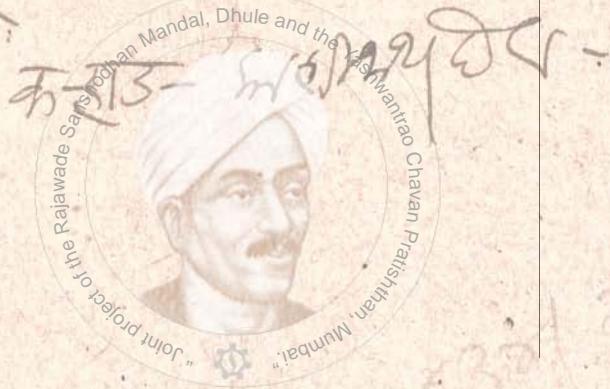
विषय म० वेदात्.



१०८-९९

मराठी ग्रन्थ

महाराष्ट्र विकास



४३६-८३६  
८३८.८.८४

॥९॥

(1)

श्रीमद्भुत्तचरणः शरणं ॥ महावा क्यविवेक प्रारंभः ॥ ये ने क्षते शैणे  
तीदं जिध्रति व्याकरोति च ॥ स्वाद्स्वाद्विजानाति तत्र ज्ञानमुदीरि  
तं ॥ १ ॥ साधनुच्चनुष्टयसंपन्नकोणीये केऽक्ल ए साखी कनिष्ठा मपुण्य  
वान् पुरुषजो तो सर्वदासकलव्यवहारी आत्मज्ञाना चामनन  
रूपविचारञ्जसा करीतुञ्जसतो ॥ तो कौण्याग्रकारचा ॥ विरक्तं अधि  
कार्यानि विश्वास पूर्वक श्रवणमनननि दिध्या सनके लेप सता  
वरीरअसतां च अष्टदोक्षसाथा कारवान् ब्रह्मस्तरूपजीवन्मु  
क होतो ॥ तो महावा क्यउन्यजद्वेति विचार श्रवण करा ॥ ये न इ  
क्षते ॥ जेष्ठे करुनजाआत्मज्ञाने करुनब्रह्मलादिपिपीलि कांत  
सकलप्राणी सकलपदार्थी चेऽवलोकन करता लू ॥ ये न शृ  
णोति ॥ जाआत्मज्ञाने करुन सकलप्राणी साखी करा उत्ते सता  
मसद्रादश्रवण करता त् ॥ ये न इदं जिध्रति ॥ जाआ

॥१०॥

(IA)

त्पशाने करून हे सुंगंधादी कवस्तु चेआधाण सर्वाखक लेते।  
येन व्याकरो निच जेणे करून ज्ञाय विष्टु ब्रह्मा दि प्रिपी लि  
कां त्रयो करो निच जेणे अस कामक मर्म के लें यासे नारा वंत स्वर्ग  
दि विषय जात रूप मायी करूं ध्यावें। निष्कामक मर्म नुष्ठाना  
जो प्राणी त्या स्वं नारा रही अस्थयी स्वरूप स्तून ब्रह्मा कारणं तः  
करण करावें। दुष्टा चानि श्रह करनो। साधु चें रक्षण करनो असे  
वेद इति रूप सकल व्यापार जाआत्म ज्ञाने करून करतात्।  
येन स्त्या दुउ त्या दु विजाना निच। अण रिख जेणे करून जाण लो  
या चें कमर्म उत्तमया चें कमर्म निष्प्रभत सेच हापदर्थ गोड हा  
कडुहा तिखट हा खारट हाऊ लणि हाम कम क्ली तहा तुरट  
हायो ग्यहाऊ यो ग्यज सें सक लक्षारी री सर्व पदर्थ मात्रा चि  
रुचि जेणे करून जाण तात्। न त प्रशंसन उदी रिनं। ने प्रक  
र्षें करून सर्व वेद शास्त्र सिधु उत्पाने क्षिति प्रलया चें का

अति

(२)

रणजवर्जनात्रथाचेंप्रकाशकजेंविर्भवोषनित्यशुभ्रबुधसुकं एक  
 लेंप्रशानत्रावेंकरूनवोलिजेलें॥१॥ अणशिवह लेपत्राचुखर्न  
 पबोधकेंआहेत्र। अनेनयेनवापद्धतीत्याहे: सर्वाण्येवेतानि  
 प्रशानस्यनामधेयानित्यनस्यावातरवाक्यसंदर्भस्य। अयमेव  
 अर्थः॥ प्रशानत्राव्याधीलेंबोल्हन अत्रत्राव्याधीलतात्र। चलु  
 मुखेंद्रदेवेषुमनुष्याच्चगवादिषु॥ चैतन्यमेकं अत्मातः प्रशा  
 नं अत्ममय्यपि॥२॥ चतुर्मुखेंद्रादि। अत्मादिपीलिकांनप्रा  
 णिमात्राचाभायींचैतन्यएकंचैतन्यएकंजेतेंआहे। अतः। या  
 सवाब्रह्मव्यापकत्वात् तेंचात्मत्रान्व्यापकउआहेआकाशा  
 सहीव्योपूनआहेजेनिर्गच्छनामत्रपरहीतपूर्णतेंब्रह्म। म  
 य्यचिप्रशानं। माझाहींभायींसकलव्यवहारासकारणतेंच  
 प्रशानस्याजेंप्रकर्षकरूनशानमात्रसत्याहेवरकडमी  
 माजेअसेंजेदिसतेंतेमृगजंकवत्तूष्यापकशानातचकली

(2A)

तज्जाहे स्थून जें सत्य आ पक ने च अ ज्ञान कल्प ने करु न जी  
 व द दो से अलैं से दि से लैं परं तु वा ल वी क अ ज्ञान च ना हि भग  
 जी व द शा को दून अ से ल ना स्य का य आ हे। जी व तो च ब्रह्म ला स्म  
 ए न त्र ग वे द नि छ महा वा क पा न उ प दे दा के ला आ हे। तें महा वा  
 क य। उ प्र ज्ञान ब्रह्म। या अ का र त्र ज्ञान अण रिव ब्रह्म ए क च जा हे  
 अ से उ गा णा वे॥२॥ त्र ग वे दा चे ए त रे य। उ प नि ष ध नि छ महा  
 वा क य सां गू न अ ने त र य जु वे दा चे वृ ह दा र ए प उ प नि ष द नि  
 छ महा वा क य उ ण रिव त्या चे लक्षा इ रु प सां ग तो॥३॥ अं अ हं ब्र  
 ग्रास्मि॥२॥ परि पूर्णः परा त्मा रिम् दे हे विद्धा धि का रि णि॥ बु  
 द्धिः सा द्धि न या जित्ता स्फुर न ह मि नी र्य ते॥३॥ परि पूर्ण जो प  
 र मात्मा। अस्मि विद्धा धि का रि णि दे हे। ह जो ब्रह्म वि द्धे स अ  
 धि का रि दे ह त्या दे ह चा ग यी अवणा दि के करु न संस्कृत जी बु

(3)

य

सिया बुधी चासा क्षि त्वे करून। किंत्वा राह न स्फुरन् प्रकाशमा  
 न होत्सान अहं उलिई र्थते। अहं पदे करून लक्ष्मी करून बोलि  
 जेतो॥ स्वतः पूर्णः परमात्मा त्रिलक्ष्मी वर्णितः॥ अस्मीत्यैक्य  
 परामर्त्त्वान्वेन ब्रह्मसंवाद्य ह॥ ४॥ स्वतः पूर्णः परमात्मा। स्वभा-  
 वे करून देवा काल वे स्तुकरून जो अनवच्छिन्नपरिपूर्णपरमात्मा।  
 अत्र ध्याम हावा क्या चाहीयां ब्रह्मशब्दे करून बोलि जेला। अस्मि  
 या पदे करून उपर्यदा वेलक्ष्मी रोकरून ऐक्य बोलि जेले। तेन अहं  
 ब्रह्मसंवाद्य। त्या कारणा स्वभी ब्रह्मकाल त्रयी होतो मृण जेओ  
 तां न बेहो या चेना ही सिद्धाच सर्वदा प्राहे अस्येऽप्येदेकरून जा-  
 णा वें॥ ५॥ आतां छांदौ अपुनि वदनि छजेम हावा क्या अर्थलि  
 हि जो अङ्गत्वं सर्वसि॥ एकमेवा द्वितीयं सन्नाम कूपविवर्जितं। स-  
 ह्ये; पुराधुराप्यस्य नाह कंतद्वितीर्थते॥ ५॥ एकमेवे ति। एकचं अ-

(३A)

व

द्वितीयं सत्त्वा मरुपरहि ल। स्त्रष्टी हन पूर्वजानं पुढें हि असें जे ता  
 ई त्कै स्त्रण जे वि चार हृष्ट्या नें च नें ए ता हृ चा स्वरूपत सदे कर्त्तव्य  
 बोलि जे लें॥५॥ श्रो लुदे हैं द्विया नीतं स्वत्र चं पदे रितं॥ एकता आ  
 द्यते स्त्री नित दै क्यमनुभूयतां॥६॥ श्रो लुः॥ महावा क्यश्वरणा स  
 औधिका री जो पुरुष त्याचे जे दे हृ च्यादि त्या हृ न उत्ती न त्रण जे  
 जिन्न असे जें वरुते अत्र। या महावा क्या चोरायी चं पदे कर्त्तव्य  
 ई रितं बोलि जे लें। असि यापदे कर्त्तव्य न उत्तरयन चं पदा चें राकचे गृ  
 हैण के लें। न न्॥ ऐ क्या अनुभूयतां। तें ए क्यु जे नें सर्वदा उत्तुभूवा वै॥७॥  
 स्वप्रकाशा परोक्षत्वमयमि स कि जो मनं॥ अहं कारादि हृ हाता त्र  
 स्यगा त्मेति गीयतै॥८॥ अथो। इति उत्किळः। अयं स्त्रण जे हायतः  
 करणा दि हृ रयसा क्षित्वे कर्त्तव्य बोलि जे लाजो तो स्वप्रकाश सर्वाचा  
 प्रकाश क अपरोक्षस्त्रण जे प्रस्यक्ष्य स्वर्गा चेपरी परोक्षन क्षेध  
 यदि का चे परी हृ रयन क्षेध जिरही तमनुजा लेस्त्रण जे अविष

(4)

त्वेकरूपत्यक्षशानस्वरूपआत्मामीआहेजसेमत्तनामसकृत्त्वे  
 दशास्त्रेकरूपविद्वज्ञनउपवेंकरूपसंमतआहे।अहुकार  
 दिदेहांलालुप्रत्यक्त्वात्मा।इतिगीयते।उपहंकारापास्त्वनदेहत्र  
 यरूपविशद्विरप्यगर्भद्विवृत्यजिशितिप्रलयविश्वतेजस  
 प्राज्ञजागृतिस्वभस्तुषुप्तिएताद्वागुणाच्चयानिमीतिजेजनेकरूप  
 भावत्याहुनप्रत्यक्त्वाथितेप्रत्यक्त्वानिमीतिते॥  
 ७॥दृश्यमानस्यसर्वस्यजगतरजत्वमीर्यते॥ब्रह्मशब्देनतद्वृ  
 त्त्वस्वप्रकाशात्मरूपकं॥८॥माथाअविद्यारूपआकाशादीक  
 परिदृश्यमाननामरूपसकजसेजेसप्रवर्णित्याचेतत्त्वज  
 धिष्ठानसञ्चिदानंदरूपब्रह्मशब्देकरूपबोलिजेलेंजें।तद्वृ  
 त्त्वम्।तेब्रह्मस्वप्रकाशआत्मरूपलक्ष्मारोकरूपजीवब्रह्म  
 ऐक्यरूपतेंचहोय॥९॥इतिअथर्वेणवेदगतस्यमहावाक्यं।

॥५॥

(4A)

ॐ अथ मात्मा ब्रह्म स्तु ॥ या ग्रकारे चं ह वे द्वा चिं चार महा वा कर्येत्या  
चा अखंड अर्थयथोक्तजा पून संप्रदाय पूर्वकत्या चें श्रवण मन  
ननि दिध्या सन जेस वर्गतम्भा वें करु नवि श्वास पूर्वक सर्वदा  
अकर्तृ अस्तो छु बुधी नें जेकरि ता हेत् ॥ तें च कल लक्ष्य आनंद  
रूप हो त्सा तेज ना सा रि रेव रा ह ता हेत् ॥ श्री कृष्ण पूर्ण मरुक्त ॥  
इति महा वा कर्यवि वें कर समाप्तः ॥ तद्राङ्क श्वार्ण मरुक्त ॥ ४ ॥  
कुलं पवित्रं जननी कृतार्थी वरु परा पुण्यवती च तेन ॥ अनं  
त संवित्कर सन सागरे स्मृती तेपरब्रह्मणि यस्य चेतः ॥ ५ ॥

॥५॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)